BUSINESS STANDARD, 6/11/2014, Pg-1

चीनी मिलों के रवैये से परेशान किसान गुड़ इकाइयों को बेच रहे गन्ना

कोल्हू में फंसे गन्ना किसान

बीएस संवाददाता
लखनऊ, 5 नवंबर

चीनी मिलों के देरी से चलने का खमियाजा उत्तर प्रदेश के गन्ना किसानों को भुगतना पड़ रहा है। रबी की बुआई के लिए खेत खाली करने की जल्दी में छोटे और मझोले किसान कोल्हू संचालकों को अपना गन्ना औने पौने दामों पर बेचने के लिए मजबूर हो रहे हैं। किसानों की बदहाली का आलम यह है कि कोल्हू संचालकों के गन्ने की कीमत घटा देने के बाद भी वह अपनी उपज का सौदा 150 रुपये प्रति क्विंटल में कर रहे हैं।

लखमीमपुर, सीतापुर, शाहजहांपुर में उत्तर प्रदेश में सबसे ज्यादा गुड़ का उत्पादन होता जबकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में बागपत, शामली, हापुड़ और मुजफ्फरनगर इसके गढ़ हैं। लखीमपुर के कोल्हू संचालक कुलदीप पाहवा का कहना है कि इस साल गुड़ के सीजन की शुरुआत में सितंबर में गन्ने की कीमत 200 रुपये दी जा रही थी। अक्टूबर जब चीनी मिल मालिकों ने जल्दी पेराई शुरू करने में हीला-हवाली दिखानी शुरू की तो इसकी कीमतें गिरने लगीं।

उनका कहना है कि आज किसान मजबूरी में 150 रुपये के भाव में ही अपना गन्ना बेचने को तैयार हैं। हालांकि उनका कहना है कि यह हालात ज्यादा दिनों तक रहने वाली नहीं है। नवंबर के आखिरी सप्ताह और दिसंबर में जब चीनी मिलों में पेराई की शुरुआत होगी तब कोल्हू संचालकों को गन्ना मिलने में दिक्कत आ सकती है। पाहवा का कहना है कि सस्ता गन्ना मिलने के चलते गुड़ के दामों में भी नरमी आई है। इधर, सरकार की सख्ती के बाद भी प्रदेश की निजी क्षेत्र की चीनी मिलें अभी पेराई शुरू करने की जल्दी में नहीं हैं। मिल संचालकों का कहना है कि बीते साल की तरह इस बार सीजन के अंत में हुई जोरदार बारिश के चलते गन्ने में नमी है जिसके चलते रिकवरी प्रभावित होगी। मिल मालिक किसी भी हाल में दिसंबर के पहले या दूसरे सप्ताह से पहले पेराई की शुरुआत नहीं करना चाहते हैं।

सहकारी गन्ना किसान संघ के अमरेंद्र सिंह का कहना है कि अभी अगर पेराई शुरू की जाती है तो गन्ने की रिकवरी 6 फीसदी से ज्यादा नहीं होगी जबकि दिसंबर में रिकवरी 7 से 8 फीदसी तक जा सकती है।

गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश में कोल्हू संचालकों को होने वाली 80 फीसदी गन्ने की आपूर्ति छोटी जोत के किसान करते हैं जिन पर समय से रबी की बुआई करने का दबाव रहता है। इसके अलावा छोटे किसानों को सहकारी गन्ना समितियों से बिक्री की परची मिलने में दिक्कत होती है, ऐसे में वे भी कोल्हुओं को अपना गन्ना बेचते हैं। चीनी मिलों की पेराई शुरू होने के बाद छोटे किसान भी अपना गन्ना इलाके के बड़े किसानों को बेच देते हैं जिसके चलते कोल्हू संचालकों को कम कीमत पर उपज मिलने में दिक्कत होती है। राज्य में गन्ने का मसला बेहद संवेदनशील है क्योंकि प्रदेश में बड़े पैमाने पर किसान गन्ने की फसल उगाते हैं।

कोल्हू को सस्ते में बेच रहे गन्ना

मजबूरी में किसान 150 रुपये प्रति क्विंटल के भाव कोल्हू को बेच रहे गन्ना

- उत्तर प्रदेश में चीनी मिलों में पेराई को लेकर बनी हुई है अनिश्चितता
- चीनी मिलों में दिसंबर से पहले पेराई शुरू होने की उम्मीद कम
- गन्ना सस्ता होने से गुड़ की कीमतों में भी आई नरमी